Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

राजकमल चौधरी के काव्य में मूल्य चेतना

डॉ राकेश चंद्र

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, जे वी जैन कालेज, सहारनपुर , भारत।

Article Info

Volume 6, Issue 3

Page Number : 80-85

Publication Issue :

May-June-2023

Article History

Accepted : 01 June 2023

Published : 12 June 2023

समकालीन लेखकों में लोकप्रिय राजकल चौधरी ने प्रयोगधर्मी एवं लोक से हटकर काव्य सर्जना की है। ये समकालीन कविता में निषेध और अकविता के पक्षधर कवि माने जाते हैं। इनका जन्म उत्तरी बिहार में मुरलीगंज के समीपवर्ती गाँव रामपुर हवेली में हुआ था। इनका वास्तविक नाम मणीन्द्र नारायण चौधरी था लेकिन स्नेहपूर्वक लोग इन्हें फूलबाबू कहकर पुकारते थे। अल्पायु में माँ त्रिवेणी देवी के असामयिक निधन का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा और माँ के प्यार की कमी को इन्होंने सदैव महसूस किया। हम व्यस्क विमाता के आ जाने से पिता के साथ इनके सम्बन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। पिता को उनके दूसरे विवाह के लिए इन्होंने कभी माफ नहीं किया। इनका विवाह शशिकांता चौधरी से हुआ जिनका इनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इन्होंने आजीविका के लिए पटना सचिवालय के शिक्षा विभाग में नौकरी की। इन्होंने मृत्युपर्यन्त कलकत्ता में पत्रकार, लेखक, अनुवादक, कवि के तौर पर लेखन कार्य किया।

कविता को नया धरातल प्रदान करने जैसा जोखिम भरा कार्य करने वाले कवि राजकमल चौधरी को इनके जीवन में उतना महत्व नहीं मिला जितना इनकी मृत्योपरांत मिला। मृत्योपरांत इन्हें समकालीन कविता का महत्वपूर्ण कवि घोषित किया गया। समकालीन समीक्षकों के लिये ये अश्लील तथा सामान्य कवि माने गये और कुछ तो इन्हें कवि तक भी नहीं मानते थे। किंतु इनकी मृत्यु के बाद इनकी कविताओं का मूल्यांकन किया गया विशेषतः 'मुक्ति प्रसंग' लम्बी कविता का जिसके बाद इनकी प्रयोग धर्मिता और लोक से हटकर काव्य सर्जना की प्रशंसा की गई।

राजकमल चौधरी के विषय में हिन्दी के प्रख्यात कवि नागार्जुन का यह काव्यात्मक मत उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की पहचान करने के लिए पर्याप्त है कि– ''कम आयु में मृत्यु होने और संख्या में अधिक न लिखने पर भी इस लेखक को इसके समकालीनों, परवर्ती लेखकों द्वारा जितना महत्व मिला है, सम्भवतः निराला तथा मुक्तिबोध के पश्चात चौधरी का नाम लिया जा सकता।''[1]

राजकमल चौधरी ने सबसे पहले स्वछंद और उन्मुक्त शब्दावली का प्रयोग किया। इनकी दृष्टि में स्त्री–पुरूष का कोई भी सम्बन्ध ऐसा नहीं है जिसका वर्णन ना किया जा सके। इसी कारण से इनकी कविता का

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

विषय ऐसा रहा है। इनका कथ्य और टेकनीक इन्हें समकालीन कविता का महत्वपूर्ण कवि बनाती है। इन्होंने उन सब पक्षों, परिस्थितियों एवं अवधारणाओं का अपनी कविता का विषय बनाया है जिन्हें सब अश्लील, नग्न और विद्रूप मानकर वर्णन करने में संकोच का अनुभव करते थे। जो समीक्षक कभी इनके कथ्य और टेकनीक को अश्लील एवं अपाठ्य घोषित करते थे वो भी अब इन्हें सामाजिक यथार्थ का कवि समझते हैं। समकालीन कविता की काव्य जगत में प्रतिष्ठा इसका कारण है। मुक्ति प्रसंग को छोड़ दें तो इनकी कविता आकार में छोटी होते हुए भी अर्थ गाम्भीर्य को प्रतीत कराने में पूर्ण सक्षम है।

इनकी तीन प्रमुख काव्य रचनाओं में 'स्वरगंधा, कंकावती तथा मुक्ति प्रसंग आती हैं। मुक्ति प्रसंग जहाँ इनकी लम्बी कविता है, वहीं स्वरगंधा मैथिली भाषा में है। कुछ स्फुट कवितायें विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं लहर, आवेग, कल्पना तथा जगदीश चतुर्वेदी के काव्य संग्रह 'प्रारम्भ' में प्रकाशित हैं जिनमें से कुछ कंकावती काव्य संग्रह में संकलित हैं। मुक्ति प्रसंग कविता इनके काव्य का आधार है जिसमें इनके काव्य संसार का परिचय मिल जाता है। इस कविता को समीक्षकों ने अपने–अपने अनुरूप विवेचित और विश्लेषित किया है जो जीवन की निजी मुक्ति से सामजिक–राष्ट्रीय मुक्ति की यात्रा का चित्रण है। ऊपरी दृष्टि से देखें तो इनकी कवितायें बौखलाए मानसिक रूग्ण व्यक्ति का एकालाप दिखाई दे सकती हैं, किन्तु गहन चिन्तन करने पर और सन्दर्भों की पकड़ करने पर इनमें अर्थ की व्यापकता दिखाई देती है।

राजकमल की कविताओं में परम्परागत कथ्य और टेकनीक के प्रति विद्रोह का भाव है उन्होंने उन सभी धारणाओं और विषयों को अपनी कविता में स्थान दिया है जो उस समय घृणित या अश्लीलत्व की श्रेणी में आते थे। अपनी सभी कविताओं में इन्होंने 'मैं' को बरकरार रखा है। इन्होनें स्वयं को अपनी कविताओं का महत्वपूर्ण विषय माना है। ये अपनी निजता और अहम के प्रति सचेत कवि हैं। इनकी कविताओं में अस्तित्व और अह ंके साथ इनके अन्तःकरण का रेखांकन हुआ है। यही इन्हें परम्परा के प्रति विद्रोही, आधुनिक एवं युग के प्रति सचेष्ट दृष्टि वाला कवि बनाता है। इसी क्रम में जीवन पर्यन्त इन्होंने संघर्ष किया और आरोपों को भी झेला। जिससे इनकी कवितायें पाठकों को चौंकाकर चिन्तन की ओर प्रेरित करती हैं जैसे–

''आदमी को तोड़ती नहीं है लोकतांत्रिक पद्धतियाँ
केवल पेट के बल उसे झुका देती हैं धीरे–धीरे अपाहिज
धीरे–धीरे नपुसंक बना देने के लिये
उसे शिष्ट राजभक्त देशप्रेमी नागरिक बना लेती है
आदमी को इस लोकतांत्रिक समाज से अलग हो जाना चाहिए।
हम लोगों को अब शामिल नहीं रहना है
इस धरती से आदमी को हमेशा के लिए खत्म कर देने की शाजिश में।[2]

इन पंक्तियों में समकालीन कवि राजनीति से क्षुब्ध है और उनकी गुमराह करने वाली प्रवृतियों के प्रति सचेत होता जा रहा है। लोकतंत्र में समकालीन कवि विश्वास से भरता चला जा रहा है। वो सोचता है कि क्यों ना सभी किसी ऐसी जगह पर चले जाये जहाँ राजनीतिक व्यवस्था में घुट–घुटकर ना मरना पड़े। प्रत्येक लेखक अपने युग के प्रति सचेत दृष्टि रखता है वह समकालीन दृष्टि से मुक्त हो ही नहीं सकता।

प्रत्येक युग की पहचान उस युग की समस्यायें और आवश्यकतायें हैं। राजकमल चौधरी ने भी अपने समाज की स्थितियों पर काव्य लिखा। आम आदमी और घटित यथार्थ का चित्रण इनकी कविताओं की विशेषता है। परम्परा के प्रति विद्रोह का भाव इनकी कविता की विशिष्टता है। इनकी कवितायें सामाजिक मर्यादा, नैतिक मानदंडो का पुष्टपेषण नहीं करती बल्कि संत्रास, अकेलापन, घुटन, सूनापन, अविश्वास, आशंका, विसंगति, फूहड़ता एवं विद्रुपता इनके काव्य का विषय है। राजकमल उन कवियों में से हैं जिन्होंने भोगे हुए यथार्थ को सामाजिक मर्यादा और नैतिकता की चिंता किये बिना ही अपनी रचनाओं का विषय बनाया। समकालीन कविता की नींव ही परम्परा विरोध एवं विद्रोह, रचनात्मकता और प्रयोगधर्मिता है। जैसे–

''अनकहे–अधबने शब्दों की शाम है
सामने झील है सोई हुई
जिसका जल
भविष्य की तरह परछाइयों में ठहरा हुआ है अव्यक्त
इसे कवि कोई शब्द नहीं देगा।
प्रत्येक शब्द में बीते हुए किसी क्षण का स्वाद,
किसी अनुभव की आशक्ति होती है।
आग्रह ही वह अर्थ है जो हमें वह,
एक खंडित शब्द जीवन दिया करता है।।[3]

यह सम्पूर्ण कविता इनके काव्य संसार के नये आयाम का परिचय देती है। कवि के सम्मुख झील की गहराई के समान भोगा हुआ निजी यथार्थ और सामाजिक यथार्थ है। यहाँ कवि ने खंडित शब्द के द्वारा जीवन के खंडित विकृतिपूर्ण रूप को अभिव्यक्त किया है। ये जानते हुए भी कि उस पर कई आरोप लगाए जायेंगे।

लम्बी कविता के अतिरिक्त इनकी लघु कवितायें भी हैं जो क्षण की अनुभूतियो को प्रदर्शित करती हैं। इनकी लघु कविता हो या लम्बी कविता इनमें महानगरीय जीवन की विविधता दिखाई देती है तथा समकालीन जीवन की विसंगति, संत्रास, घूटन, आंशका, अविश्वास, विद्रोह और विरोध के दर्शन होते हैं। इनकी कविताओं में आने वाले अधिकांश प्रसंगो में अभिव्यक्ति में सांकेतिकता का गुण है। इनकी लघु कविताओं के शीर्षक और कथ्य में वैयक्तिक चेतना का प्रत्यक्ष रूप विद्यमान है। 'गत्तो के घर और सत्य,' 'सुबह,' 'एक बीमार जिन्दगी,' 'अपनी ही बीवी के लिए,' 'मुक्ति,' 'मैं और अंधेरे में मेरी मौत,' 'खुले दरवाजे से,' 'मौन कठिन है' आदि कवितायें इनके निजी जीवन का परिचय

देने वाली हैं। इनमें कवि अपनी भीतरी कमियों और दुर्बलताओं को स्वीकारता है। बिना इसकी चिंता किये कि पाठक उनके बारे में क्या सोचेंगे। स्त्री कविता मूलतः इनकी क्षणिका है। जैसे–

''स्त्री कभी नग्न नहीं होती
अपनी त्वचा से ढ़की हुई
उजाले सोती है।।''[4]

इन पंक्तियों में कवि का अनुभव स्त्री की मनोवैज्ञानिक प्रवृति का परिचय देने वाला है। ऐसे ही धर्म क्षणिका इनकी ईश्वर के प्रति नकारात्मक दृष्टि को समझने जानने का संकेत करती है। वास्तव में इनकी संक्षिप्त आकार वाली ये कवितायें युग बोध की स्थिति का बोध कराने वाली हैं । जैसे–

''अपने ही कंधो पर ले अपना शव
ईश्वर
चीखता हुआ भागता रहता है और
एक शिशु
अपनी अबोध मुस्कानों में हरदम
उसका पीछा करता रहता है।''[5]

समाज में धर्म और ईश्वर के नाम पर परम्परा और रूढ़ियों की आड़ लेकर अनाचार हो रहे हैं परन्तु कवि जीवन की यथार्थ भूमि को अबोध शिशु की भाँति जीने के पक्षधर हैं और धर्म की आड़ में होने वाले कृत्यों का विरोध करता है। वास्तव में इनकी कवितायें आकार में लघु होने के बावजूद भी अर्थ और सन्दर्भ में व्यापकता का गुण लिये है।

इनके काव्य में अर्थ की अपेक्षा सन्दर्भों और पृष्ठभूमि की सांकेतिक अभिव्यक्ति दिखाई देती है। उनकी हर कविता में कथ्य की ये व्यापकता निजत्व का गुण लिये है। जैसे उनकी कविता 'एक ही नाटक बार–बार' में कवि अपनी अंतरचेतना में बहुत सी स्थितियों का सामना करता है और उसका अहसास निजता की सीमा में होने पर भी सामाजिक सन्दर्भ को दर्शित करता है। यहाँ पर कवि को जिन्दगी की रिक्तता का अनुभव होता है। जैसे–

''एक ही नाटक की बार–बार दुहराई गई ट्रेजेडी
अब नहीं
इस खाली शीशे पर केवल अपने की घुटने
रेंगते हुए
अपना ही जानवर।''[6]

राजकमल की कविताओं का आधार काव्य विश्लेषण है जो अन्तसचेतना एवं अन्तस्संघर्ष में संवेदनाओं के अहसास की पहचान कराती है। इनकी अपने जानवर में आत्म स्वीकृति है तथा समाज के वर्ग की सांकेतिक अभिव्यक्ति है ये अपने काव्य में सामाजिक यथार्थ को शब्द की व्यापकता में प्रस्तुत करते हैं। जैसे– इनकी कविता 'नींद में भटकता हुआ आदमी,' जिसकी शुरूआत आवारा सपनों की नींद में एकांत सड़कों पर घूमने से होती है। बीमार टैक्सियां, बेहोश औरत की ठहरी हुई आँखों की तरह रात, कविता के व्यापक संदर्भ को दर्शाती हैं। बीमार और बेहोश शब्द से कवि युग की पहचान करवा देता है। कवि अकेला रह गया है तथा सब कुछ देखकर चुपचाप खड़ा रह गया है। अपनी एक साथ फुटपाथ और ऊँचे मकान कविता को प्रतीकात्मक अर्थवत्ता देते हैं। कवि अपनी विचित्र स्थिति को मानसिक धरातल पर अनुभव करता है–

''टैक्सी में भी हूँ और फुटपाथ पर खडा भी हूँ
सोये हुए शहर की नस–नस
किसी मासूम बच्चे की तरह, जिसकी माँ खो गई है, भटकता रहता है
मेरी नयी आजादी और मेरी मुसीबतें उफ्
चीख और ठहाके
एक साथ मेरे कलेजे से उभरते हैं।[7]

ऐसा ही काव्य संसार इनकी रहस्यहीन कविता में भी है। जहाँ कवि के सम्मुख अनेक प्रश्न हैं और इन प्रश्नों के उत्तर भी कवि समझ चुका है। कवि को सारे कथ्य की प्रत्यक्ष धरातल पर पहचान है। इसीलिये आत्म स्वीकृति इनके कृतित्व की विशेषता है। जैसे–

कवि नहीं हूँ, मनुष्य हूँ और मनुष्य रहकर कविता का दुख (अथवा कविता के अभाव का दुख) झेलता हूँ। प्रकृति से मेरे सम्बन्ध और सम्पर्क टूट गए हैं..... प्रकृति से, इस प्रकार ईश्वर से मेरा रिश्ता यही है। मैं अक्सर प्रकृति और ईश्वर को भूल जाता हूँ। अपने जीवन में भी और अपनी कविता में भी क्योंकि, मेरे जीवन और मेरी कविता में कोई भेद, कोई दूरी नहीं है। मेरी कविता मेरे आन्तरिक जीवन और मेरे अस्तित्व के रहस्यों, यथार्थों और योजनाओं को प्रकट और अंकित करती हैं।''[8]

राजकमल चौधरी का काव्य संसार कविता को मुक्ति का माध्यम बनाता है और मनुष्य को परतन्त्र बनाने वाली ताकतों में बदलाव चाहता है। कवि का विश्वास जीवन की सहज अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता में है।

इनकी लम्बी कविता 'मुक्ति प्रसंग' इनकी प्रतिभा, अनुभव और संवाद एवं संवेदनाओं का बहुआयामी दस्तावेज है। इसमें कवि स्वयं की अन्तर्विरोधी स्थितियों को बताता हुआ परिवेश और स्थितियों के सत्यों को उद्घटित करता है तथा जीवन के प्रति सार्थक दृष्टिकोण का परिचय देता है। परम्पराओं और वर्तमान की अवधारणाओं को अनेक रूपों में प्रस्तुत कर जीवन के प्रति एक सार्थक दृष्टिकोण देता है। इनकी यह कविता मिथकों, बिम्बों और प्रतीकों का संस्पर्श करती है इसका केन्द्रीय भाव उग्रतारा का मिथक है। इनकी यह कविता मानसिक तनाव,

अन्तरचेतना की वैयक्तिक्ता से सामाजिक यथार्थ का चित्रण कर अन्तर्राष्ट्रीय स्थितियों का परिचय देती है। इस कविता का मूलगत कारण वे जिजीविषा और मुमुक्षा को मानते हैं।

''तुम मेरी पृथ्वी हो और मैं तुम्हारा देवता हूँ'' और कवि हूँ। तुम मुझे जन्म देती हो और मेरे साथ रमण करती हो।

तुम मुझे मुक्त करती हो

और मैं तुम्हें मुक्त करता हूँ अपने चरण में।

अपनी कविता में।।''[9]

इन पंक्तियों में कवि स्वयं को सोया हुआ वर्तमान शिव मानते हुए उग्रतारा की पूजा के लिये कहता है। मुक्ति प्रसंग कवि की एक ऐसी कविता है जो उनके अपेक्षित आयामों एवं पहलुओं के प्रति सजग है।

मुक्ति प्रसंग, लघु कविताएं तथा क्षणिकायें और अन्य लम्बी कवितायें कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व की विलक्षणता को सूचित करती हैं। इनकी कवितायें ईमानदारी के साथ इनका आत्मसाक्षात्कार है। ये अपने आत्मविश्लेषण में ईमानदारी से अपनी दुर्बलताओं को स्वीकारते हैं। इनकी कवितायें किसी भी तरह की नैतिकता का आवरण ओढ़े हुए नहीं हैं। इनकी कविता खुली पुस्तक के समान इनकी जिन्दगी को दर्शाती हैं। इनकी कविता स्त्री के अनेक रूपों यथा माता, पत्नी, प्रेमिका एवं बेटी के अलावा, वेश्या और पागल का भी वर्णन करती हैं। इनकी कविताओं में भी परम्परा का जर्जर रूप स्वीकार्य नहीं है। इनकी कविता सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों का चित्रण करती है। मिथकों, रूपकों तथा बिम्बों को व्यापकता के साथ प्रस्तुत करती हैं। शब्दों को इन्होंने गहनता के साथ लिया है जो अनुभव की स्थितियों को सांकेतिक रूप से अभिव्यक्त करते हैं। इसीलिये इनकी कविता की मूल्य चेतना जीवन और समाज को धरातल प्रदान करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उद्धत–नागार्जुन, सं0 प्रभाकर माचवे दिल्लीः राजकमल प्रकाशन 1977, पृ0 40
2. राजकमल चौधरी, समकालीन हिन्दी कविता संवाद, सं0 निनय पृ0 84–85
3. राजकमल चौधरी, पहली कविता की आखिरी शाम, लहर, सं0 प्रकाश जैन तथा मनमोहिनी पृ0– 12–13
4. राजकमल चौधरी, 'स्त्री' प्रारम्भ, सं0 जगदीश चतुर्वेदी 1963, पृ0 90
5. वही पृ0– 12
6. राजकमल चौधरी, 'स्त्री' प्रारम्भ, सं0 जगदीश चतुर्वेदी 1963, पृ0 90
7. राजकमल चौधरी, कविता लहर, सं0 प्रकाश जैन तथा मनमोहिनी 1968, पृ0 45, 47
8. वही पृ0– 45–47
9. राजकमल चौ0 'मुक्ति प्रसंग' 1966, पृ0 28, वाणी प्रकाशन, प्रका0 वर्ष 2006